



International Journal of Research in Academic World



Received: 02/June/2024

IJRAW: 2024; 3(8):08-12

Accepted: 30/July/2024

दुष्कर्म का महिलाओं के स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का हनुमानगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*प्रेरणा दाहुजा और ²डॉ. सतीश कुमार

¹शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग, टॉटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत।

²शोध निर्देशक, सामाजिक विज्ञान विभाग, टॉटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत।

सारांश

दुष्कर्म एक गंभीर समस्या है और भारत में यह समस्या दिन प्रतिदिन अपने चरम पर पहुंचती जा रही है। जबकि पहले की अपेक्षा बेहतर तकनीक से लेस पुलिस बल, फास्ट ट्रेक न्यायालय की सुविधा, पहले की अपेक्षा अधिक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान उपलब्ध हैं। उसके बावजूद न तो दुष्कर्म की घटनाओं में कमी आ रही है और न ही दुष्कर्म पीड़िता की स्थिति सुधर रही है। यहां यह गौर करना जरूरी है कि मात्र कानून के कठोर करने अथवा उन्नत तकनीक विकसित करके इस समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता है। इन अपराधों को रोकने के लिए कुछ अन्य कारकों पर कार्य करने की आवश्यकता है, जैसे संरचनात्मक ढांचे में परिवर्तन करके सामाजिक मूल्यों, पितृसत्तात्मक ढांचे, एवं सांस्कृतिक व्यवहारों एवं मूल्यों में परिवर्तन करके दुष्कर्म की घटनाओं की तीव्रता को कम किया जा सकता है। साथ ही दुष्कर्म पीड़ित महिलाओं के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को बदला जा सकता है। दुष्कर्म की घटनाओं को पूर्णतया रोकना संभव नहीं है। परन्तु समाज की पीड़िता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को बदल कर पीड़िता के जीवन को सरल अवश्य बनाया जा सकता है। जब नकारात्मक अभिवृत्ति पीड़िता के बजाए दुष्कर्म के प्रति हो जाएगी तो दुष्कर्म संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी, साथ ही दुष्कर्म मिथकों की स्वीकार्यता भी कम हो सकती है और इसका प्रभाव दुष्कर्म की दर पर आवश्यक रूप से दृश्यमान हो सकता है।

मुख्य शब्द: दुष्कर्म, पीड़िता, मानहानि

प्रस्तावना

दुष्कर्म का शाब्दिक अर्थ है बलपूर्वक किया गया कोई कार्य, लेकिन अपराधिक सन्दर्भ में, बलपूर्वक किए गये सभी कार्य दुष्कर्म नहीं है। वस्तुतः बलपूर्वक किसी महिला के साथ किया गया मैथुन या शारीरिक संसर्ग ही दुष्कर्म कहलाता है। दुष्कर्म की परिभाषा समय के साथ बदलती रहती है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, दुष्कर्म का अर्थ है कि किसी महिला के साथ उसकी सहमती के विरुद्ध, जबरदस्ती स्थापित किया जाने वाला यौन संबंध छ भारतीय दंड संहिता की धारा 375 और धारा 376 दुष्कर्म से ही संबंधित है। धारा 375 में जहां दुष्कर्म को परिभाषित किया गया है, वहीं धारा 376 में दुष्कर्म के लिए दिए जाने वाले दंड का प्रावधान है। दुष्कर्म दंड

संहिता (आई० पी० सी० इंडियन पेनेल कोड) की धारा 375 में दुष्कर्म को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में महिला के साथ किया गया मैथुन, दुष्कर्म की श्रेणी में आता है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि किसी स्त्री की इच्छा के विरुद्ध, उसकी सहमति के बिना अथवा उसे डरा-धमका कर किसी स्त्री के साथ किया गया सहवास, दुष्कर्म के दायरे में आता है। भारतीय दंड संहिता के मुताबिक यदि किसी कन्या की आयु 16 वर्ष से कम हो तो उसके साथ उसकी सहमति से किया गया सहवास भी दुष्कर्म की ही श्रेणी में आता है। दुष्कर्म को एक ऐसी घटना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें निम्नतम सहमति को देखा जा सकता है। जिसके अंतर्गत

पुरुष महिला पर अत्यधिक डर का इस्तेमाल उसके विरुद्ध करता है एवं उसका शारीरिक एवं मानसिक शोषण करता है। 2013 में निर्भया दुष्कर्म हत्याकाण्ड के बाद दुष्कर्म और सामूहिक दुष्कर्म जैसे अपराधों के लिए नए और सख्त कानून बनाए गए हैं, उसके कुछ अहम बिंदु इस प्रकार हैं:

- दुष्कर्म की परिभाषा अब और अधिक विस्तृत कर दी गई है। 18 साल से कम उम्र की लड़की के साथ उसकी मर्जी या मर्जी के खिलाफ संबंध दुष्कर्म माना जाएगा।
- आईपीसी की धारा 375 के तहत रेप के दायरे में जबरन शारीरिक संबंध बनाना या अप्राकृतिक संबंध बनाना, ओरल सेक्स आदि को रखा गया है। साथ ही, प्राइवेट पार्ट के पेनेट्रेशन के अलावा किसी अन्य चीज के पेनेट्रेशन को भी इस दायरे में रखा गया है।
- दुष्कर्म के वैसे मामले जिसमें पीड़िता कोमा में चली जाए या जख्मी होने के कारण उसकी मौत हो जाए, इसके लिए आईपीसी की धारा 376-ए का प्रावधान किया गया है, जिसमें कम से कम 20 साल और ज्यादा से ज्यादा जीवन भर के लिए उम्रकैद या फिर फांसी की सजा का प्रावधान किया गया है। सामूहिक दुष्कर्म के लिए आईपीसी की धारा 376-डी का प्रावधान किया गया है। इसके तहत कम से कम 20 साल और ज्यादा से ज्यादा उम्रकैद (अजीवन कारावास) की सजा का प्रावधान किया गया है। अगर इस दौरान दुष्कर्म पीड़िता कोमा में चली जाए या उसकी मौत हो जाए तो अधिकतम फांसी की सजा लागू होगी।
- सीरियल रेपिस्ट के लिए आईपीसी की धारा 376-ई का प्रावधान किया गया है। इसके तहत उम्रकैद जिसमें आजीवन कारावास या फिर फांसी की सजा का प्रावधान किया गया है।
- आई० पी० सी० में छेड़छाड़ के अपराध में सजा के दायरे को बढ़ा दिया गया है और आईपीसी की धारा-354 में कई सब-सेक्शन बनाए गए हैं। इनमें कई प्रावधान गैरजमानती कर दिए गए हैं।

प्रस्तावित अन्वेषण महत्त्व

समाज में तो दुष्कर्म के संबंध में अत्यधिक निषेध एवं चुप्पी दिखती है परन्तु यही चुप्पी और कमी साहित्यों में भी देखने को मिलती है। खास कर समाजशास्त्र में इस समस्या पर अत्यधिक कम प्रकाश डाला गया है, जबकि दुष्कर्म प्रतिमानों एवं मूल्यों के टूटने के कारण भी घटित होता है। इसलिए यह देखना जरूरी हो जाता है कि समाजशास्त्र इस संबंध में क्या दृष्टिकोण रखता है एवं दुष्कर्म और दुष्कर्म के लिए उत्तरदायी कारकों को समाजशास्त्री किस परिप्रेक्ष्य से देखते एवं इसकी व्याख्या करते हैं।

दुष्कर्म की समस्या को सामान्य बोध की दृष्टि से देखा जाय तो यह एक प्रकार का असामान्य यौन व्यवहार एवं

व्यक्तिगत रूप से किया गया अपराध प्रतीत होता है। जिसमें लिंग असमानता, लिंग भेद, जैसे दृष्टिकोण शामिल होते हैं। परन्तु समाजशास्त्री इस प्रकार के मुद्दों की व्याख्या करने के दौरान अत्यधिक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण को अपनाते हैं एवं बिना पूर्वाग्रहों से ग्रसित हुए बिना सामाजिक समस्याओं एवं समस्या से संबंधित कारणों की सटीक व्याख्या करते हैं। जबकि नारीवादियों का मानना है कि दुष्कर्म एक विपथन नहीं बल्कि एक सामान्य घटना है जो लगभग हर प्रकार के समाजों में सामान्य रूप से विद्यमान रहा है। नारीवादियों का यह मानना है कि समाजशास्त्र समस्या की व्याख्या महिला एवं पुरुष से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोण से करता है। परन्तु समाजशास्त्र में इस समस्या पर प्रकाश नहीं डाला गया है जबकि दुष्कर्म एक व्यक्तिगत समस्या होने के साथ ही साथ सामाजिक समस्या भी है, क्योंकि दुष्कर्म से न केवल पीड़िता प्रभावित होती है बल्कि परिवार एवं समाज भी प्रभावित होता है। व्यक्तिगत संबंधों के साथ साथ सम्पूर्ण परिवार की मानसिक एवं सामाजिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पश्चिमी समाजशास्त्र में थोड़ा बहुत कुछ मिल भी सकता है परन्तु भारतीय समाजशास्त्र में दुष्कर्म एवं दुष्कर्म संबंधी मुद्दों की पूर्णतया अनदेखी की गयी है। दुष्कर्म पर जो लेख एवं साहित्य उपस्थित भी थे उन पर पश्चिमी नारीवादी लेखनों का अत्यधिक प्रभाव था। नारीवादियों के लेखनों के माध्यम से ही दुष्कर्म संबंधी साहित्य एवं लेखन दृश्यमान होने लगे एवं दुष्कर्म संबंधी समस्याओं को इसके माध्यम से पेशेवर साहित्यिक पहचान मिली।

अध्ययन की आवश्यकता

दुष्कर्म अपने आप में बहुत रहस्यपूर्ण प्रकृति का प्रतीत होता है। इसका कारण यह है कि दुष्कर्म के संबंध में समाज में अत्यधिक चुप्पी, निषेध एवं भ्रांतियां व्याप्त हैं। इस अध्ययन के संबंध में यह बात ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि इस सन्दर्भ में साहित्य की भारी कमी देखने को मिलती है और यदि यही अध्ययन भारत जैसे पारम्परिक समाज में किया जा रहा हो तो यह कमी अपने चरम पर देखने को मिलती है। दुष्कर्म के संबंध में व्याप्त इस निषेध चुप्पी एवं भ्रांतियों के कारण इस विषय पर आम जन की राय एवं अभिवृत्तियों का मापन करना अत्यधिक कठिन कार्य रहा है। खासकर दुष्कर्म पीड़िता एवं दुष्कर्म पीड़िता के परिवार के सदस्यों से साक्षात्कार करना सर्वाधिक दुरुह कार्य रहा है। समाज की नकारात्मक अभिवृत्ति एवं समाज में व्याप्त दुष्कर्म मिथकों के कारण पीड़िता एवं उसके परिवार के सदस्य अत्यधिक अपमान, मानहानि एवं कलंकित हो जाने की भावना से ग्रसित रहते हैं, इस कारण आसानी से वे साक्षात्कार के लिए तैयार नहीं होते हैं। इस कारण कुछ ही लोगों का साक्षात्कार किया जा सका है। इसके अलावा समाज के लोगों की अभिवृत्ति के मापन के दौरान भी काफी लोगों द्वारा शर्म एवं असहजता महसूस करने के कारण साक्षात्कार अनुसूची भरने को तैयार नहीं हो रहे थे। अतः

इस अध्ययन को करने के दौरान किसी भी प्रकार के भ्रम, भ्रान्ति एवं अल्पज्ञता को दूर रखने के लिए इन सीमाओं के प्रकाश में ही इस अध्ययन को पूर्ण किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान दुष्कर्म एवं दुष्कर्म पीड़िता के प्रति अभिवृत्ति का मापन अनेक अवधारणाओं, आयामों एवं परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से किया गया है। इस परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि पीड़िता के प्रति समाज की अभिवृत्ति को नकारात्मक बनाने में कौन से कारक जिम्मेदार होते ? किस प्रकार की संरचनात्मक मूल्य, संस्कृति अथवा संस्था नकारात्मक अभिवृत्ति के निर्माण में योगदान देती है?

इन प्रश्नों के उत्तरों की खोज के साथ साथ यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि पीड़िता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति में कैसे सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इसके अलावा अन्य आयामों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। जैसे कि दुष्कर्म को समाज द्वारा किस प्रकार समझा जाता है और समाज किस प्रकार दुष्कर्म को व्याख्यायित करता है, इस प्रश्न का उत्तर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से खोजने का प्रयास किया गया है। साथ ही दुष्कर्म मिथक एवं दुष्कर्म पीड़िता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति किस प्रकार अपनी निरन्तरता को बनाए रखती है, दुष्कर्म एवं बलत्कार पीड़िता के प्रति जो नकारात्मक अभिवृत्ति समाज में व्याप्त रहती है उसका पुनरुत्पादन किस प्रकार होता है, इसकी गहन पड़ताल करने का प्रयास किया गया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस अध्ययन के माध्यम से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि दुष्कर्म की घटना घटित हो जाने के बाद पूरी नकारात्मक अभिवृत्ति, दोषारोपण, जिम्मेदारी एवं दुष्प्रभाव पीड़िता को ही क्यों उठानी पड़ती है? इन सभी प्रश्नों एवं समस्याओं का हल समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ढूँढने का प्रयास किया गया है। एवं अंत में नकारात्मक अभिवृत्ति और पीड़िता के पुनर्वास के मध्य अंतर्संबंधों को समझने एवं उसकी व्याख्या करने का प्रयास करते हुए नीति निर्माण एवं नकारात्मक अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने हेतु कुछ उपयोगी सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

शोध समस्या

किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए परिकल्पनाएं अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं। परिकल्पना न केवल शोध का दिशानिर्देशन करती है बल्कि सीमांकन भी करती है। वेबस्टर (1968) ने प्राक्कल्पना को निष्कर्ष निकालने और तर्क संगत या स्वानुभूत नतीजों का परीक्षण करने के लिए प्रयोगार्थ अनुमान कहकर परिभाषित किया है। विशेषीकृत रूप से प्रस्तुत शोध की प्रमुख परिकल्पनायें इस प्रकार हैं—

1. क्या दुष्कर्म की घटनाओं के कारण महिलाओं के अधिकार चारदीवारी, घर की चौखट तक सीमित हो गये हैं?
2. दुष्कर्म की घटनाएँ महिला विकास में किस प्रकार बाधित हैं?

साहित्य का पुनर्वालोकन

स्मिथ एवं लेवेट (2010) ने अध्ययन में यह पड़ताल किया कि किस प्रकार वृहत् स्तर पर छात्र व छात्राएं उत्पीड़न संबंधी सूचनाएं प्राप्त कर रहे थे और वे सूचनायें किस प्रकार व किस स्तर तक दुष्कर्म संबंधी पूर्वानुमानों, विश्वासों, मिथकों और अभिवृत्तियों को प्रभावित कर रहे थे। इस अध्ययन में इस बात की भी पड़ताल करने का प्रयास किया कि इन सूचनाओं के माध्यम से कितनी जागरूकता उत्पन्न हो रही है और इस जागरूकता के कारण क्या पुरुष व महिला छात्र और छात्रायें अपने विरुद्ध हुये यौन शोषण के बारे में रिपोर्ट कराते हैं या नहीं। निष्कर्ष में यह तथ्य सामने आया कि महिलायें दुष्कर्म संबंधी मिथकों से कम प्रभावित होती हैं जबकि पुरुष अधिक प्रभावित होते हैं।

एरोनोविट्स, टी, एट अल (2012) ने अपने लेख में कालेज के छात्रों के बीच यौन व्यवहार के संबंध में सामाजिक मानदंडों के मिथकों के स्वीकृति की भूमिका के संबंध में चर्चा की। अपने अध्ययन में इन्होंने (237) छात्रों को शामिल किया इसमें महिलाओं की संख्या सबसे अधिक थी इस सर्वेक्षण में विश्वविद्यालय के छात्रों को शामिल किया गया। इस अध्ययन में यह जांच की गई कि सूचना, प्रेरणा, व्यवहार और कौशल ज्ञान दुष्कर्म मिथकों को स्वीकृत करने में किस प्रकार की भूमिका निभाता है। इस ऑनलाइन सर्वेक्षण में अधिकतर उत्तरदाताओं ने माना की नशे में पीड़ित महिला दुष्कर्म के लिए पुरुष की अपेक्षा ज्यादा जिम्मेदार होती है। एरोनोविट्स टी, एट अल ने अपने निष्कर्ष में पाया कि जिन छात्रों ने दुष्कर्म मिथकों को अधिक समर्थन दिया उन छात्राओं का यौन ज्ञान और सूचनायें भी कम थी।

सागोरकर एवं वर्मा (2014) ने अपने लेख के निष्कर्ष में लिखा है कि परिवेश में घुलती अनैतिकता व लज्जाहीन आचरण ने पुरुषों के मानस में स्त्री को भोग्या ही निरूपित किया है जो कि स्त्री के वस्तुकरण और बाजारीकरण की ओर संकेत करता है। महिलाओं के प्रति बढ़ता अपमान—जनक वातावरण भी पुरुष के दुस्साहस में वृद्धि करने में उत्प्रेरण का काम करता है। दुश्मन को सबक सिखाने, प्रेम निवेदन के टुकुराये जाने पर अपने अहं की तुष्टि हेतु भी पुरुष दुष्कर्म करता है।

कविता कृष्णनन, 2014 ने अपने लेख दुष्कर्म संस्कृति के विरुद्ध में कहा कि दुष्कर्मी पैदा नहीं होते, उन्हें बनाया जाता है—उस समाज द्वारा जो महिलाओं को नीचा दिखाता है और गुलाम बना कर रखता है। जब महिलाएं समाज में आगे आएंगी, शिक्षित बनेंगी, नौकरी करेंगी, सार्वजनिक जीवन (व्यापार, उद्योग, खेती, मजदूरी, राजनीति, खेल, साहित्य, कला, समाजसेवा आदि) में आगे आएंगी, तो कई बार ऐसे मौके आते हैं, जब उन्हें अकेले बाहर जाना पड़ता है। सवाल यह है कि एक ऐसा समाज क्यों नहीं बना सकते, जिसमें महिलाएं आजादी के साथ सुरक्षित घूम सकें? या आप महिलाओं को घर की चारदीवारी में ही कैद रखना चाहते हैं? घर में बंद रहने

पर महिलाओं में हिम्मत और आत्मविश्वास नहीं आएगा और वे ज्यादा आसानी से शिकार बन जाएंगी।

विभा हेतु (2014) ने अपने लेख में अत्यधिक हिंसात्मक दुष्कर्म व सामान्य दुष्कर्म के संबंध में लोगों के विचारों का गहनता के साथ विश्लेषण किया है। विभा ने अपने लेख में दुष्कर्म की घटनाओं के संबंध में मीडिया रिपोर्टिंग के चयनात्मक रिपोर्टिंग के नकारात्मक पक्षों को उजागर करते हुए कहा कि, मीडिया द्वारा मात्र उन्हीं घटनाओं की जानकारी दी जाती है जो बहुत वीभत्स रूप से घटित हुए हों, मीडिया की रिपोर्टिंग अवधारणा आधारित होती है जो दुष्कर्म संबंधित मिथकों को और अधिक पुष्टि प्रदान करती है। मीडिया की बढ़ती दुष्कर्म के मामले की चयनात्मक रिपोर्टिंग से लोगों की मानसिकता भी उसी तरह सोचने पर प्रभावित होती है। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि मीडिया को रिपोर्टिंग के मामले में कोई पूर्वाग्रह नहीं लेना चाहिए लेकिन श्लाघार्ण दुष्कर्म श और शसली दुष्कर्म श दोनों को समान बल देने पर विचार करें। मीडिया द्वारा दुष्कर्म के मामलों का चित्रण समाज की आम धारणाओं को प्रभावित करता है जो अजनबियों से दुष्कर्म के लिए जिम्मेदार हैं, इसलिए घर के बाहर महिलाएं असुरक्षित हैं। विभा ने अपने लेख में दुष्कर्म पीड़ितों के पुनर्स्थापन हेतु एजेंसियों को प्रशिक्षित करने के लिए उचित माना है ताकि वे ऐसे समुदायों में जा सकें जैसे कि उन्हें श्लिंगश के लिए संवेदनशील बनाया जाये ताकि उन्हें लोगों की मानसिकता से दुष्कर्म के मिथकों का सफाया करने और उन्हें जरूरतों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके। साथ ही यह भी मानती हैं कि दुष्कर्म पीड़ितों को चिकित्सा करने और लोगों को उनसे जुड़ने में मदद करने के लिए यह बहुत लंबा रास्ता तय करना पड़ सकता है। पीड़ितों की जरूरतों की पूर्ति और उनके लिए सहायता के प्रावधान को सुविधाजनक बनाने के लिए अधिक लचीला और अधिक विविध समर्थन प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

दुष्कर्म एक सार्वभौमिक रूप से घटित होने वाली परिघटना है। दुष्कर्म पीड़िता के प्रति रखी जाने वाली नकारात्मक अभिवृत्ति भी सार्वभौमिक है जो भिन्न-भिन्न प्रकार के समाजों और संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। परन्तु इसके विपरीत मानवशास्त्रियों ने यह माना कि दुष्कर्म सभी समाजों में घटित होने वाली परिघटना नहीं है। इस संबंध में सेंडी (1981) में हुए अपने अध्ययन के माध्यम से 'दुष्कर्म रहित समाज' की अवधारणा दी और अधिकतर समाजों में यही माना जाता रहा कि दुष्कर्म सभी समाजों में समान रूप से नहीं पाया जाता है, जब तक कि नारीवादियों ने इस संबंध में अपने विचारों को प्रकट नहीं किया था। पुरुषों को महिलाओं के प्रति अपराध करने, हिंसक होने, अपशब्दावली बोलने या निर्दयी होने की प्रेरणा कहाँ से मिलती है? अपराधिक हिंसा के सम्बन्ध में तीन सम्प्रदाय इस प्रकार हैं जो महिलाओं के प्रति पुरुषों का हिंसात्मक व्यवहार और

महिलाओं के प्रति पुरुषों के हिंसात्मक यौन व्यवहारों एवं अपराधों की व्याख्या करते हैं:

1. मनोविकार निदान सम्प्रदाय जो शोषक व शोषित के व्यक्तित्व के गुणों पर प्रकाश डालता है।
2. सामाजिक मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय जो व्यक्ति के दैनिक क्रियाकलापों पर बाह्य कारकों के प्रभाव पर प्रकाश डालता है।
3. दुष्कर्म की घटना के घटित होने के पीछे सामाजिक मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय के पांच महत्वपूर्ण सैद्धांतिक प्रस्ताव प्रकार हैं जो महिला विरोधी हिंसा को आधार प्रदान करते हैं
4. आक्रामक मूल प्रवृत्ति कुण्ठा उत्पन्न करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध उपयोग की जाती है।
5. विचलित क्रिया शैशवी मूलप्रवृत्तियों कुत्सित भावनाओं और अपराधी के आहत अहं का प्रतिफल होती हैं, इसे विपर्यास सिद्धांत भी कहा जाता है।
6. निम्न सम्मान के लोग विचलित या हिंसात्मक कार्य द्वारा दूसरों एवं स्वयं की दृष्टि में अपनी छवि सुधारने का प्रयत्न करते हैं।

शोध में पाया कि दुष्कर्म पीड़िता को स्वयं के प्रति सकारात्मक बोध के पुनर्निर्माण हेतु अपने आस पास के लोगों के सहयोग एवं सहानुभूति की आवश्यकता होती है। दुष्कर्म पीड़िता महिलाओं के प्रति नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर्गत पीड़िता के आस पास का पूरा समाज शामिल होता है। इन्हें हम चार स्तरों में बाँट कर देख सकते हैं। प्रस्तुत शोध में हम चारों स्तरों पर पीड़िता के प्रति जो नकारात्मक अभिवृत्ति व्याप्त है उसे कम करने हेतु कुछ उपाय एवं सुझाव के संबंध में चर्चा करेंगे जो भविष्य में पीड़िता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

- प्राथमिक स्तर पर पीड़िता का परिवार, नातेदार, पड़ोस, दोस्त और पीड़िता के वैवाहिक संबंधों से जुड़े संबंध शामिल होते हैं।
- द्वितीयक स्तर पर पीड़िता के न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े लोग मसलन पुलिस, चिकित्सीय परिक्षण से जुड़े लोग. मनोचिकित्सक, वकील और न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े न्यायाधीश।
- तृतीयक स्तर पर सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थान जो पीड़िता के पुनर्वास एवं विधिक सहायता प्रदान कराने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत शोध में हम चारों स्तरों पर पीड़िता के प्रति जो नकारात्मक अभिवृत्ति व्याप्त है उसे कम करने हेतु कुछ उपाय एवं सुझाव के संबंध में चर्चा करेंगे, जो भविष्य में पीड़िता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, कमलेश (2008), बलात्कार होने पर पीड़िता के लिए कानून एवं मार्गदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली ।
2. टाकभौरे, सुशीला (2007), स्त्री विरोधी पुरुषों की विकृत मानसिकता का खण्डन, युद्धरत आम आदमी, विशेषांक-स्त्री नैतिकता का तालिबानीकरण, 21-27
3. ठाकुर, सुनीता (2013), बलात्कार और कानून, हम सबला, जनवरी-सितम्बर, पृ० स० 23-24 ।
4. दत्ता, निलांजू (2013), हमारी बात (सम्पादकीय), हम सबला, जनवरी-सितम्बर ।
5. नैमिश्राय, मोहनदास (2010), दलित उत्पीड़न की परम्परा और वर्तमान, सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ० 48.
6. पटेल, विभूति (2013), हिंसा व महिला सशक्तिकरण..... हम सबला, जनवरी-सितम्बर, पृ० 3-5.
7. पार्टन, गुप्ता, शर्मा (1993). सामाजिक अनुसंधान (शोध) एवं अभियोग्यता, साहित्य भवन पब्लिकेशन, मेरठ पृष्ठ 193 ।